Std-5 **Sub-Hindi**

पाठ-१ राख की रस्सी

पाठ का सारांश-

तिब्बत के बत्तीसवें राजा सौनगवसेन गांपो के मंत्री का नाम लोनपोगार था। लोनपोगार अपनी चालाकी और हाज़िरजवाबी के लिए प्रसिदध था। लेकिन उनका बेटा बहुत भोला था। वह इतना भोला था कि लोनपोगार काफीं चितिंत हो उठे। वे चाहते थे कि उनका बेटा उनकी तरह होशियार हो। एक दिन उन्होंने अपने बेटे को सौ भेड़े देकर शहर जाने को कहा। साथ में उन्होंने कहाँ कि यह भेड़ो को मारे या बेचे नहीं बल्कि इन्हें सौ जौ के बोरो के साथ वापस लाए। उसका बेटा शहर पहुँच जाता है। वह बहुत चिंतित था क्योंकि उसके पास सौ बोरे जौ खरीदने के लिए रुपये नहीं थे। उसकी मदद एक लड़की ने की। पहली बार उसने भेड़ो के बाल उतारकर और दूसरी बार भेड़ो के सींग काटकर सौ जौ के बोरे खरीद घर उस लडकी ने उसे घर वापस भेज दिया। फिर लोनपोगार उस लडकी से मिलने को बात करता ह। उसका बेटा उस लड़की से लोनपोगार को मिलवाता है। लोनपोगार उस लड़की को नौ हाथ लंबी राख की रस्सी बनाने को कहा। लड़की ने राख की रस्सी बनाई और लोनपोगार को पहनने को कहा। लड़की की समझदारी और सुझबुझ से वे काफी प्रभावित हुए और अपने बेटे को शादी उस लड़की से करावा दी।

* **कठिन शब्द**

१-हाजिरजवाबी	२-होशियार
३-जौ	४-हल
५-मुश्किल	६-तरीका
७-प्रस्ताव	

* **शब्दार्थ**

१-हाजिरजवाबी-तुरंत उत्तर देना	२-होशियार-चालाक
३-जौ-गेहूँ की तरह का एक खाद्य पदार्थ	४-हल-समस्या
६-मुश्किल-कठिन	७-तरीका-उपाय
८-प्रस्ताव-सुझाव,पेशकश	९-सम्मुख-सामने

* **अतिलघ उत्तरीय प्रश्न**

१-लोनपो ने सौ जौ के बोरों को लेने के लिए अपने बेटे को कहाँ के लिए रवाना

किया?

उ-लोनपो ने सौ जौ के बोरों को लेने के लिए अपने बेटे को शहर के लिए रवाना किया।

२-लोनपो के पुत्र को किसे मारने या बेचने की आज्ञा नहीं थी?

उ-लोनपो के पुत्र को भेडो को मारने या बेचने की आज्ञा नहीं थी।

३-भेडों के बाल बेचना किसे पसंद नहीं आया?

उ-भेडों के बाल बेचना लोनपो को पसंद नहीं आया।

*** लघु उत्तरीय प्रश्न**

१-लोनपो कौन थे? वह क्यों प्रसिद्ध थे?

उ-लोनपो तिब्बत के बत्तीसवें राजा सौनगवसेन गांपो के मंत्री थे। वे अपनी चालाकी और हाजिरजवाबी के लिए दूर-दूर तक मशहूर थे।

२-लोनपो किसके कारण चिंतित थे और क्यों?

उ-लोनपो अपने बेटे के कारण चिंतित थे क्योंकि वह बहुत भोला था।

३-दूसरी बार शहर जाने पर लोनपो के पुत्र ने बैठने के लिए पुरानी जगह को ही क्यों चुना?

उ-क्योंकि उसे यकीन था कि वह लड़की उसकी मदद के लिए वहाँ जरूर आएगी।

४-पहली बार जौ के सौ बोरे लाए देखकर लोनपोगार ने क्या किया?

उ-पहली बार जौ के सौ बोरे लाए देखकर लोनपो गार उठकर कमरे से बाहर चले गए।

*** दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

१-पहली बार शहर जाकर लोनपो का पुत्र क्यों दुखी था तथा उसकी मदद किसने की?

उ-लोनपो का बेटा शहर पहुँचा। मगर सौ बोरे जौ खरीदने के लिए उसके पास पैस नहीं थे।कोई हल उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था।वह बहुत दुखी था तथा उसकी मदद एक लड़की ने की।

२-लोनपो किसके कारण चिंतित थे और क्यों?

उ-लोनपो अपने बेटे के कारण चिंतित थे क्योंकि वह बहुत भोला था।

३-दूसरी बार शहर जाने पर लोनपो के पुत्र ने बैठने के लिए पुरानी जगह को ही क्यों चुना?

उ-दूसरी बार शहर जाने पर लोनपो के पुत्र ने बैठने के लिए पुरानी जगह को ही चुना क्योंकि उसे यकीन था की वह लड़की उसकी मदद के लिए जरूर आएगी।

४-पहली बार जौ के सौ बोरे लाए देखकर लोनपोगार ने क्या किया?

उ-पहली बार जौ के सौ बोरे लाए देखकर लोनपोगार उठकर कमरे से बाहर चले गए।

(व्याकरण-विभाग)

* **संज्ञा-** कसी भी व्यक्ति, वस्तु, जाति, भाव या स्थान के नाम को ही संज्ञा कहते हैं।
जैसे -मनुष्य जाति, अमेरिका, भारत स्थान, बचपन, मठासभाव, कताब, टेबल, वस्तु आदि।

*** संज्ञा के भेद-**

१) व्यक्तिवाचक संज्ञा- जो शब्द केवल एक व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराते हैं उन शब्दों को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे– भारत, चीन स्थान, कताब, साइ कल,वस्तु, सुरेश, रमेश, महात्मागाँधी व्यक्ति आदि।
व्यक्तिवाचक संज्ञा के उदाहरण–

- रमेश बाहर खेल रहा है।
- महेंद्र संह धोनी क्रकेट खेलते हैं।
- मैं भारत में रहता हूँ।
- महाभारत एक महान ग्रन्थ है।
- अ मताभ बच्चन कलाकार हैं।

२) जातिवाचक संज्ञा- जो शब्द कसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान की संपूर्ण जाति का बोध कराते हैं, उन शब्दों को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

- जैसे- मोबाइल, टीवी (वस्तु), गाँव, स्कूल (स्थान), आदमी, जानवर (प्राणी) आदि।
- जातिवाचक संज्ञा के अन्य उदाहरण-
- स्कूल में बच्चे पढ़ते हैं।
- बिल्ली चूहे खाती है।
- पेड़ों पर पक्षी बैठे हैं।

३) भाववाचक संज्ञा– जो शब्द कसी चीज़ या पदार्थ की अवस्था, दशा या भाव का बोध कराते हैं, उन शब्दों को भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे–बचपन, बुढ़ापा, मोटापा, मठास आदि।

भाववाचक संज्ञा के उदाहरण–

ज्यादा दोड़ने से मुझे थकान हो जाती है।

- लगातार परिश्रम करने से सफलता मलेगी।

(लेखन–विभाग)

अनुच्छेद लेखन

अनुशासन–

- "अनुशासन" शब्द का अर्थ है किसी विशेष नियम के अनुसार कार्य करना। अपने को वश में करना अनुशासन कहलाता है।स्पष्ट है कि अनुशासित और नियमित व्यवहार सुखदायी होता है। कुछ लोगों का विचार है कि माता–पिता और गुरुओं की आज्ञा का पालन करना भी अनुशासन में गिना जाता है। नियमपूर्वक जीवन बिताना अर्था त्समय पर सोना, समय पर जागना, समय पर भोजन करना, समय पर सैर करना, समय पर खेलना, समय पर स्कूलजाना आदि अनुशासन में ही गिने जाते हैं।अध्यापक के अनुशासित चरित्र से विद्यार्थी अध्यापक को सम्मान ही नहीं देता है अपितु उसे अपना आदर्श भी मानता है। किसी भी व्यक्ति के लिए अनुशासन सदैव लाभदाय कही होता है। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन के बिना सफल जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आज देखने में आता है किस ्माज के प्रत्येवर्ग में अनुशासन ही घर किए हुए है। इसका पहला कारण माता–पिता है जो आरम्भ से ही बच्चों को अनुशासन की शिक्षा नहीं देते। अनुशासन हीनता का दूसरा बड़ा कारण हमारी शिक्षा प्रणाली है। आज स्कूल और कॉलजों में पढ़नेवाले विद्यार्थी स्वयं ही अपने विद्यालय के भवन को आग लगाते हैं और तोड़–फोड़ करते हैं। यह स्थिति चिन्तनीय है।देश की सम्पत्ति को नष्ट करने का अर्थ स्वयं को ही नष्ट करना है।अनुशासन प्रत्येक मानव और प्रत्येक प्राणी के लिए आवश्यक है। इससे शान्ति बनी रहती है और समाज समृद्धि की ओर अग्रसर होता है।

*** स्वाध्याय- संज्ञा को पहचानकर लिखिए।**

१–रामायण २–छात्र ३–रंगत

४-गोपी ५-उदास

* **गतिविधि-** लोनपोगार और भेड़ों का चित्र बनाए अथवा चिपकाए।